ROOTINDEXING
JOURNAL ABSTRACTING AND INDEXING SERVICE
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in September2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

"हनुमानगढ़ जिले में आधुनिक कृषि से पर्यावरण पर पड़ने वाला प्रभाव"

कृष्ण लाल शोधार्थी :- भूगोल विभाग सनराइज विश्वविद्यालय (अलवर)
डॉ. हरवीर यादव सहायक आचार्य कला संकाय (भूगोल-विभाग)सनराइज विश्वविद्यालय (अलवर)

शोध सार –

भारत एक कृषि प्रधान देश है। देश की अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार कृषि है। राजस्थान राज्य भी कृषि ने अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। राज्य की 60 से 65 प्रतिशत जनसंख्या कृषि व कृषि आधारित उदधीयो मे सलग्न है। क्षेत्रफल की दृष्टि से देश का सबसे बड़ा राज्य होने के पश्चात मीए विभिन्न जलवायु दशाओं के करना राज्य कृषि उत्पादन में पिछड़ा हुआ है। राज्य हल हनुमानगढ़ जिला भी कृषि क्रियाकलापों के कारण अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। कृषि क्रियाकलापो ने जिले की आधुनिकरण के साथ-साथ आर्थिक व्यवस्था पर पूर्ण प्रभाव डाला है।

आधुनिक कृषि के कारण उत्पादन मे तो वृद्धि हुई है। लेकिन पर्यावरण तथा पारिस्थितिकी तन्त्र पर अत्याधिक प्रभाव पड़ा है। जो हमारे लिए अंत्यंत घातक सिद्ध होना होता जा रहा है। प्रस्तुत शोध मे हनुमानगढ़ जिले में आधुनिक कृषि से होने वाले पर्यावरणीय प्रभाव का अध्ययन किया गया है। जो जिले में उत्पादित होने वाली विभिन्न फसलों के संतुलित को प्रस्तावित करती है।

प्रस्तावना –

भारत एक विकासशील देश है। इसकी 70 प्रतिशत से ज्यादा जनसंख्या गांवों में निवास करती है। जिनकी आजीविका का साधन कृषि है। कृषि देश की अर्थव्यवस्था मे अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है। २० वी शताब्दी के पश्चात् कृषि में परम्परागत विधियो को छोड़कर आधुनिक विधियो का प्रयोग किया जाने लगा। जिससे कृषि कार्यों के साथ-साथ कृषि उत्पादों मे भी अपेक्षित सफलता की प्राप्ति हुई। तथा विभिन्न परम्परागत समस्याओं का भी समाधान प्राप्त हुआ।

हरित क्रान्ति के पश्चात् देश मे कृषि क्रियाओं में मशीनीकरणए उर्वरको का प्रयोगए खाद्य आपूर्ति समस्याए भण्डारण के नवीन तरीके तथा संरक्षण ने असम्भव को सम्भव बना दिया। जिससे कृषि मे वाणिज्यिक स्वरूप का उदय हुआ। उत्पादन बढ़ाए प्रति हेक्टयर जिला कृषि विस्तार में वृद्धि हुईए यह सब हरित क्रान्ति से ही सम्भव हो पाया है।

लेकिन हरित क्रान्ति के अत्याधिक विकास व विस्तार के कारण इसके दुष्परिणाम भी सामने आने लगेए रासायनिक उर्वरको कर व खाद के प्रयोग से भूमि मे लवणीयता व क्षारीयता के साथ जलक्रान्ता की समस्या बढी । विभिन्न आधुनिक कीटनाशको व कृषि मशीनो का प्रयोग करने से पर्यावरणीय समस्याओं में वृद्धि देखने को मिली है।

अध्ययन क्षेत्र –

हनुमानगढ़ जिले का प्राचीन नाम भटनेर था। बीकानेर शासक सूरत सिंह ने भटनेर को मंगलवार के दिन 1805 में विजयी किया। जिसके कारण इसका नाम भगवान हनुमान के नाम पर हनुमानगढ़ रखा गया। पहले हनुमानगढ़ जिला श्री गंगानगर जिले का हिस्सा था। 12.7.1994 को इसे नया जिला बना दिया गया।

हनुमानगढ़ जिला राजस्थान के उतरी भाग मे स्थित है। तथा यह 29°5श से 30°06श उतरी अक्षांश और 74 से 75°6 पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इसकी उतरी-पूर्वी सीमा पर पंजाब, हरियाना राज्य व पश्चिमी में श्री गंगानगर जिला स्थित है। इसका कुल क्षेत्रफल 9656 वर्ग किमी0 है। जो सम्पूर्ण राजस्थान के क्षेत्रफल का 2.82 प्रतिशत है।

इसकी कुल जनसंख्या 2001 मे 1774692 है। वर्तमान मे हनुमानगढ़ जिले की गिनती राजस्थान के प्रमुख शहरों में होती है।

शोध-समस्या चयन – राजस्थान में कृषि के आधुनिकरण में कई अंतर है। सामाजिक, आर्थिक व कृषि सम्बन्धि असमानताओ के आधार पर राजस्थान में हनुमानगढ़ जिले की अपनी

एक विशिष्ट पहचान है।

हनुमानगढ़ जिले के साथ-साथ इसमे विभिन्न तहसीलों मेंए ग्रामीण बैंकए सहकारी समितियों, डेयरी विकासए सिंचाई परियोजनाओं उच्चशिक्षाए राजस्व सुधारए सार्वजनिक निर्माण कार्य इत्यादि मे विकास हुआ। इसलिए इस तहसील व जिले को कृषि के आधुनिकरण से इस जिले में होने वाले पर्यावरणीय प्रभावों के अध्ययन हेतु हनुमानगर जिले का चयन किया गया है।

अनुसंधान कार्य के उद्देश्य-

शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य हनुमानगढ़ जिले में कृषि विकास के स्तर तथा इससे पड़ने वाले पर्यावरणीय प्रभावों का अध्ययन करना है। प्रस्तुत शोध इस उद्देश्य पर आधारित है। कि कृषि में आधुनिकरण का प्रभाव पर्यावरण को किस तरह से हानि पहुंचाता है। तथा इसके इसके क्या समाधान हो सकते हैं।

प्रस्तुत शोध कार्य मे निम्नलिखित अनुसंधान के उद्देश्य हैं।

(1) अध्ययन क्षेत्र मे कृषि विकास का अध्ययन

(2) अध्ययन क्षेत्र में कृषि आधुनिकरण से उत्पन्न समस्याओं का अध्ययन करना। हो रहा

अनुसंधान की अवधारणा -

किसी भी शोध कार्य को करने से पहले कुछ परिकल्पना की जाती है। जो सकारात्मक या नकारातूक दोनो हो सकती है। प्रस्तुत शोध कार्य मे कुछ परिकल्पनाएं की गई है। जो निम्नलिखित है।

(1) अध्ययन क्षेत्र मे बढी जनसंख्या के परिणामस्वरूप कृषि आधुनिकरण में लगातार परिवर्तन है।

(2) कृषि के बदलते प्रारूप के कारण अध्ययन क्षेत्र मे विभिन्न पर्यावसीय समस्याएं उत्पन्न हो रही है।

अध्ययन विधि व आंकड़ों का संकलन-

प्रस्तुत शोध कार्य में कृषि विकास प्रारूपए फसल प्रतिस्प तथा रासायनिक उर्वये का उपयोगए जैसे तथ्यों का विश्लेषण करने के लिए विभिन्न मानचित्रिय एवं सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है। शोध कार्य के पूर्ण करने के लिए प्राथमिक व द्वितीयक आकड़ो का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक आँकड़े स्थानीय स्तर पर क्षेत्र का पूर्व पुनरावलोकन करके प्राप्त किए गए। जबकी द्वितीयक आँकड़े विभिन्न सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं से प्रकाशित प्रतिवेदन से प्राप्त किए गए हैं। हनुमानगढ़ जिले के सभी प्रकार के आकड़े सम्बन्धित विभागों से प्राप्त किए गए।

कृषि के आधुनिकरण से हनुमानगढ़ जिले के पर्यावरण पर प्रभाव :-

हनुमानगर जिले में जनसंख्या की निरंतर वृद्धि होने के कारण एवं कृषि भूमि कम होने से फसलों में उत्पादन वृद्धि हेतु विभिन्न रासायनिक उर्वरको के साथ-साथ अजैविक पदार्थो को भी कृषि कार्यों में समाहित किया गया है। जिसके परिणामस्वरूप पारिस्थितिकी तंत्र व कृषि भूमि व अत्यधिक विनाशकारी प्रभाव पड़ा है।

रासायनिक उर्वरको व कीटनाशकों का प्रभाव :-

कृषि में अत्यधिक उच्च पैदावार और खरपतवार और किटो के लिए कीटनाशकों का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है। जिससे कृषि उपज में तो वृद्धि हुई है। लेकिन दूसरी ओर इसके विपरीत परिणाम भी सामने आ रहे हैं।

रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के उपयोग से भूमि में कार्बनिक तथा अकार्बनिक घटक संद्धलित हो रहे हैं। इसके साथ- साथ में मानव स्वास्थय को भी प्रभावित कर रहे हैं। हनुमानगढ़ जिले कि रावतसर, नोहर, भादरा, पीलीबंगा, टीबी, संगरिया तहसीलों में अत्यधिक कीटनाशकों तथा रासायनिक खादो का उपयोग किया जाता है।

आधुनिक कृषि का प्रभाव-

हनुमानगढ़ जिले की विभिन्न तहसीलों में सघन कृषि की जाती है। और कई फसले उगाई जाती

है। वही दूसरी ओर कृषि भूमि में विभिन्न पोषक तत्वों जैसे N.P.K. कैल्शियम, सल्फर, और मैग्नीज, लौहा इत्यादि तत्वों की कमी हो रही है जिसके भयानक परिणाम देखने को मिलेंगे। आधुनिक कृषि क्रियाकलापों से मित्र कीटों का भी विनाश हो रहा है। जिससे हानिकारक कीटों को अप्रत्याशित वृद्धि मिल रहीए हमारे आस–पास का वातावरण भी इसी कृषि से प्रभावित हो रहा है।

निष्कर्ष :–

उपरोक्त अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला गया है कि हम आधुनिक को पूर्णतः अस्वीकार तो नहीं कर सकते हैं। क्योंकि जनसंख्या वृद्धि के कारण हो रही भोजन कि कमी को आधुनिक कृषि से ही दूर किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त आधुनिक कृषि व परम्परागत कृषि में समन्वय स्थापित करके ही कृषि में सुधार किया जा सकता है। तथा पर्यावरण व पारिस्थितिकी कि रक्षा की जा सकती है।

सन्दर्भ सूची :–

1. कौशिक, एस. डी. (1996) - "मानव एवं आर्थिक भूगोल "रस्तोगी प्रकाशन (मेरठ)
2. जोशी, वाई.जी. (1972) - नर्मदा बेसिन का कृषि भूगोल मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी (भोपाल)
3. बसन्त मोघे : (1985)- "राजस्थान में कृषि उत्पादन" हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर
4. सक्सेना एच. एम. - (1987) - राजस्थान का भूगोल हिन्दी ग्रन्थ अकादमी (जयपुर)
5. BHTIA, S.S. (1965) - "PATTERN OF CROP CONCENTRATION AND DIVERSIFICATION IN INDIA' ECONOMIC GEOGRAPHY
6. BRIAN. W. ILBERY (1986) - AGRICULTURAL GEOGRAPHY SOCIAL AND ECONOMIC ANALYSIS
7. CHAUHAN T.S. (1987) = AGRICULTURAL GEOGRAPHY A STUDY OF RAJASTHAN STATE , ACADEMIC PUBLISHERS, JAIPUR.
8. CHEW, H.C (1958)-: FIFTEEN YEARS OF AGRICULTURAL CHANGE
9. DUBE R.S. (1991) - APPLIED AGRICULTURAL GEOGRAPHY